





१ नागसमाधिसूत्र॥

ॐ नमो श्री वज्र सत्वाय ॥ १ ॥ ॐ अं हूं श्री मद्य ऊ सग गुज वन च प्र शम्पादि
 उ समन्वा ह ज कु मा वृ द्वा अ स्य खा दि कु सी लि नी ॥ न मा वे ज वा ना रु जा न व
 प्र श ना गा ना जा ऊ य द्य व प्र शे त्या म व नो रा स म धि य स फा कृ त्वा रु ना र स प्र व
 ना य स न्य क म सर्व सत्क ज न नी ध म्मा य व ज्ञा त्म का इ ह ॥ ॐ शु रा व गु द्वा
 सर्व ध म्मा न्या दि ॥ ॐ शु रा व गु द्वा व ना त्म का इ ह ॥ द कि श ह रु क स कानु ह
 न्या दि ॥ ॐ व ज य म्म ह रु क ॥ ॐ वूं मां जि र्वं हूं ॥ ॐ लूं मां यां नां अूं अूं ॥ ॐ ना
 म रू क न क रू म नी वं हूं रु द्वा हा ॥ ॐ हूं ॥ सिल ॥ हां ॥ उ ह्री ष व की ॥ क हूं
 हूं ॥ व हूं ॥ ना सिका ॥ हां ॥ व क्ता ॥ हां ॥ क क ॥ हूं ॥ रु द य ॥ हूं ॥ मा हि ॥ ह
 ॥ गु ष्ठा ॥ हूं ॥ पा द ॥ हूं ॥ सिंघा ॥ अूं न्या ॥ ॐ अं हूं ॥ यि का या वि ष्ठा न ॥

ॐ वं स्वाहा वज्र ॥ ॐ नूं स्वाहा ॥ यष्ट ॥ हूं स्वाहा ॥ पूष्य ॥ नां स्वाहा ॥ गंध ॥ गं
स्वाहा ॥ धूप ॥ ज्ञां स्वाहा ॥ दीप्य ॥ ॐ जां स्वाहा ॥ याद्र ॥ ॐ वज्र रुम स्वाहा ॥
मह्य लया ना ॥ दिग्वन्ध ॥ ॐ सुमनी हूं रुद्र ॥ ॐ गृह ॥ १ हूं रुद्र ॥ आदि ॥ ॐ मटि
किस्व स्वष्ट देवता काम नृपशस्य हं दिविकसि न कमला पात्रि सूर्यो कृष्ण कालनि
धन ॥ दश दिग्वन्ध काले नानक ॥ ॐ मदनी वज्र रुद्र ॥ ॐ सर्वपापविघ्न ॐ स्वात
न माजी पद्म वाच रुद्र वमन रुद्रा कूसरा दीन यज्ञाय नान्यसंग ॥ रुद्र हं सर्वपाप
वसानि रुद्रा वायित्वा मंत्री कनू क्षामूदिनाय द्वाः सर्वसत्त्व समसो ह्वा स्व हं दिष्ट
रुद्र काज ॥ वीज यज्ञि क्षामृगा ॥ घाल सृजन न न दश दिग्वन्ध न जलोक नानुक्ति न ॥
सर्वदेव न न द्वा न त्पल्लि ॥ आकर्ष ॥ वज्री कृष्ण रुद्रादि ॥ ॐ वज्र वनू

प्रवजसत्काजाय अर्घ्यं आयमर्त्तं प्रमिच्छन्त्याहा ॥ ऊं हूं वं हूं ॥ ॥ पुष्पान्यासः ॥ ॐ
आश्वेनी च नीलवव नूधाय स्वाहा ॥ ॐ आश्वजव नूधाय ॥ दधू ॥ ॐ वीसुकी नाग
जाजाय ॥ रुद्रान ॥ ॐ रुद्रकाय ॥ खडास ॥ ॐ कर्कोटकाय ॥ धडास ॥ ॐ पयसाय
॥ ॐ वसु ॥ ॐ कुल ॥ नागजाजाय ॥ खडाकान ॥ ॐ मंमहाभाय ॥ खडाथकान ॥ ॐ
कैकुलिकाय ॥ ॐ डाथकान ॥ ॐ धीं धं खयालाय ॥ ॐ डाकाकान ॥ मन्नाश्रय ॥
यानिकामरधस ॥ पूर्व ॥ ॐ गगधर्गजाय ॥ ॐ वं वदप्ररु नागजाजाय ॥ ॐ वं व
मनागजाजाय ॥ ॐ सुसूर्यप्ररु नागजाजाय ॥ ॐ धं मं रुवाकु नागजाजाय ॥
ननादक्षिणद्वानमरधस ॥ ॐ मं मविनिदनागजाजाय ॥ ॐ मं मधियमना
जाजाय ॥ ॐ धीं वं वदप्ररु नागजाजाय ॥ ॐ वं वधनागजाजाय ॥ ॐ हूं हूं

ननागनाजाय॥ पश्चिमद्वानयनिकामख्य॥ उं गं गं अनागनाजाय॥ उं
सिसिधनागनाजाय॥ उं अं अं सूत्रनागनाजाय॥ उं वं वं दनागनाजाय॥ उं
सिसिनागनाजाय॥ उरुनद्वानयनिकामख्य॥ उं अं अं निलनागनाजा
य॥ उं अं अं नकनागनाजाय॥ उं अं अं नवनकनागनाजाय॥ उं अं अं गिर्वनाग
नाजाय॥ उं अं अं सहस्रिकलनागनाजाय॥ अरुनादियमदल॥ उं अं अं नला
नागनाजाय॥ अ॥ उं नदनागनाजाय॥ न॥ उं अं अं मद्रनागनाजाय॥ वा॥
उं वं वं धनागनाजाय॥ ॐ॥ प. ला. यं मु॥ वनिसनावनसत्रनयनत्रप्रलाज
उलपूष्यजलाग्रयनं भजेत्तदागकनयूकनधीश्वरूपरुमावनिष्ठिकूपरु
मावनिष्ठिक॥ रुधिनवनृधनमाम्यही॥ उं नमस्तु नमामि नमो नमो सर्ववनूश

पूजाय लूनात्मानं निर्यामि ॥ सर्वसत्त्वयन्त्रिदार्श आत्मा ही निर्याम
यामि ॥ संसालवमि लूमाहमयष्टु पायं ऊ सर्वध दन नूवाक मताहिरु
दधायामि मिहिरुका च ध निवमनसा पूजना जिनाताम वूच वूच लू न
वूच कूलय रुक नर ध ऊ मधि मंगल कालि पूरु ॥ कसुबे लव ऊ माघ
रु दानयो वूचा माहा ऊ ध निधयानि धम यामि ऊ ध न दध वल म न ध
ययामि ॥ पध धू धू खनिक ली क नू धा उ विरु ध म वि धू धि लू नू यान्त म
द स म धू मी ध जिनात्मा ऊ गाऊ न गु धिन महानं ॥ निर्यामि निरिनि
ऊ दाह न न वूचा य सामंगनाय रु स्यात्मा कार्य ॥ सर्वात्मना हि म न व मुनि
ऊ ऊ नार्थि यं ॥ ली क रू स ध दध वया लिय हाया ॥ अहा वना मू क न

वत्तालुयवाधिर्जगदर्थसिद्धियामनरुचनवाधियदमाहायद॥सामा
ध्याम्यागयगुङ्गायानका॥नरुसीवाधिसंमलपूजशुजशमरुधर्यका
प्रद्यवायधर्मधजाह्नकनद्रुपानिलकाजशान्तिविकोशनकल्लुखल्ल
हर्मी॥नद्रुपानिवकाजशवनृक्षरुधनयदाल्लहर्मी॥नद्रुपानिलकाजश
पृथिवीचक्रुजमुयीनकाधीविष्णुविकवजाल्लहर्मी॥नद्रुपानिलकाजश
सुमन्त्रचक्रुजल्लमयंशुषुभ्रुआपरशमहिकी॥नद्रुपानिलकाजशकुर्य
कालचक्रुजमुचक्रुघोलचक्रुसानशरुषिकेहालाच्चहालकिकिनीजाल
वक्रुलिक्रमसिर्वयर्थी॥नत्तरुधर्यकाजपनिधमृगपद्ममेदीवि
रायकेशलकमात्राककटिहृकापानिस्यस्यकापानिमृगी॥वकाज

वीजवचनधवेनायनयनिशासृगैवचनधनागनाजाखगवर्धुमन
व्यस्यसफरुधध्यादिर्न॥४॥सर्वादिवलधनवामकननागया
धवलधनद्रव्यालिङ्गिर्नःनारुजधसर्वाकालेविविधसंस्कारजर्धः
माक्षिस्यलिर्न॥४॥नरपर्वदलवासकिनागनाजाखगवर्धुनवरुधध
दिर्नदक्षिधवचनद्रवामद्रव्यालिङ्गिगव्याकात्रवीजविहाय॥४॥दक्षि
दलनद्रुननागनाजात्रकवर्धुयक्षरुधध्यादिर्न॥नकात्रवीजदक्षि
धअरुयहसकवामद्रव्यालिङ्गिगयर्धुन॥४॥पश्चिमदलककोटक
नागनाजाहनिगवर्धुसफरुनाद्यादिर्नःकीकात्रवीजदक्षिधललिर्न
वामद्रव्यालिङ्गिगवायम्॥४॥उरुनदलयमनागनाजाध्ववर्धु

विष्णुश्चक्रादिर्नृपकाजवीर्जदक्षिणसूर्यवामद्वयालिङ्गिर्निरावयन
विदिता ॥ अग्नयश्चक्रं रुद्रनागनाजा रुद्रवर्धुदक्षारुक्षचक्रादिर्नृप
काजवीर्जदक्षिणसूर्यवामद्वयालिङ्गिर्निरावयन ॥ १ ॥ नैमग्नः
महायज्ञनागनाजा ॥ सिमन्तकवर्धुद्विष्टीदक्षारुक्षचक्रादिर्नृपदक्षिणसूर्य
सिध्वर्ज ॥ वामद्वयालिङ्गिर्नृपकाजवीर्जदक्षिणसूर्यवामद्वयालिङ्गिर्निरावयन ॥ २ ॥ वायुव्यदलक
लिकनागनाजाविष्णुवर्धुद्विष्टीदक्षारुक्षचक्रादिर्नृपदक्षिणसूर्यवामद्वयालिङ्गिर्निरावयन
ध्वर्ज ॥ वामद्वयालिङ्गिर्नृपकाजवीर्जदक्षिणसूर्यवामद्वयालिङ्गिर्निरावयन ॥ ३ ॥ इष्टीश्चक्रादिर्नृप
लनागनाजापीनवर्धुनवर्धुदक्षारुक्षचक्रादिर्नृपकाजवीर्जदक्षिणसूर्यवामद्वयालिङ्गिर्निरावयन ॥ ४ ॥ मध्यय
ज्ञसु ॥ आया निना ३३ न ॥ पूर्वयज्ञयानिकासु ॥ स्वानवाया ॥ ५ ॥ उं नुवल

नागनाडा रुप निगडी ननागनाडा रुप वधुय स्वाहा ॥ मरध्व ॥ उं वं
परुनागनाडा रुप वधुय ॥ ४ ॥ उं सूर्य परुनागनाडा नक वधुय ॥
वाम ॥ उं समवाडुनागनाडा रुधम वधुय ॥ वाम ॥ दक्षिण दिगय नि
काय ॥ उं मविनागनाडा यी न वधुय ॥ मरध्व ॥ उं मधि परुनागनाडा
रुप वधुय ॥ ४ ॥ उं रुनुनागनाडा रुधम वधुय ॥ ४ ॥ उं वधुनागना
डा नक वधुय ॥ वाम ॥ उं रुनागनाडा रुधम वधुय ॥ वाम ॥ ४ ॥ प
श्चिम घात पनिका ॥ ४ ॥ उं रंगनागनाडा नक वधुय ॥ मरध्व ॥ उं सिं
नागनाडा रुप वधुय ॥ दक्षिण ॥ उं असुजनागनाडा रुधम वधुय ॥ द
क्षिण ॥ उं चक्रनागनाडा यी न वधुय ॥ वाम ॥ उं सिमानागनाडा रुधम व

धुम्यः॥ वामः॥ ॥ उरुनक्षत्रपत्रिका॥ ॥ ॐ अनिननागनाजाश्चाम
वधुम्यः॥ मरुधः॥ ॐ अननक्षत्रनागनाजाश्चामवधुम्यः॥ दक्षिणः॥ ॐ अन
वक्षत्रनागनाजाश्चामवधुम्यः॥ दक्षिणः॥ ॐ समक्षिद्रनागनाजाश्चामवधुम्य
॥ वामः॥ ॐ अक्षत्रनागनाजाश्चामवधुम्यः॥ वामः॥ ॥ विदिगयत्रिकाकु
नसः॥ ॐ अननक्षत्रनागनाजाश्चामवधुम्यः॥ अक्षत्रः॥ ॐ नैदक्षत्रनागनाजाश्चामवधुम्य
यः॥ नैमक्षत्रः॥ ॐ समक्षत्रनागनाजाश्चामवधुम्यः॥ वायुः॥ ॐ वर्धनक्षत्रनागना
जाश्चामवधुम्यः॥ वायुः॥ ॐ वर्धनक्षत्रनागनाजाश्चामवधुम्यः॥ दक्षिणः॥ ॥
पूजाद्यैर्मुक्तलाधियानिनागनाजाश्चामवधुम्यः॥ सत्त्वार्थयिसदा
निर्णयवक्षत्रादीनमस्तु॥ ॐ नक्षत्रविधिनागनाजाश्चामवधुम्यः॥

लीविहृष्टादिर्न पञ्चगुणगन्दिगवर्धुस्त्वमन्त्रधायनीयाहव
नि॥ १॥ उँवज्जधार्गवनीहँ उँसत्ववकीहँ उँनत्ववकीहँ उँधर्मवकीहँ
उँकर्मवकीहँ॥ समयसत्त्वज्ञानसत्त्वमवलोकिनीपरध्वन॥ २॥ आठ्या४
उँहँ वँहा४॥ अरिषकमहावर्ज्यादि४॥ मकूटवज्रध्वेष्टनामाचार्य॥
वँ आँ जिँ खँ हँ॥ उँदेकाह्रिषकपूष्यन्यास॥ अथ मसीप्रवक्षामिका
यमधुलमरुम॥ अंगन्यास॥ उँविष्यकायविष्यजननालीवन्नृशता
गमाजाविद्र॥ हँ शिज॥ हँ उँह्रिया॥ उँह्रिकाशदवास्तववास्तकि
॥ हिँ कर्तु॥ वृद्धाग्रयः पूष्यजनीरुआगजलनालिका॥ सूर्यनन्दक
याला॥ हँ वद्वया॥ श्रीगामिलानिलम॥ शीखयाले॥ हँ नासा॥ शभा

न नार्द्धा कर्काटकं मूख ॥ द्विपनादिलनयदश नामजम ॥ नरुका ॥
उं कर्काटकायापूय्यन सर्वत्रस्य ललादन कूलिक ॥ हूं हृदय ॥ यमना
गम लंकाजलाकेले ॥ हों नारी ॥ माहायम रजलाऊखना ॥ हों गुफे
कूपदकवाध्वा कूलिक ॥ हों याद ॥ कूं हाग वाजनांग ॥ कूं शिखा ॥ सु
राय सुवन रक्ष घनागम मग नानिलेजस्य सामान्य नागसे व्यक्त ॥ उं व
नूधाय कूं वं कूं स्वाहा ॥ १ ॥ नमावलिंद आन ॥ उं आवमनी प्रमिरे स्वाहा
उं वऊ नूधाय खखखाहि शनिष्ठ २ वं ध्व २ मूमकस्य साकि प्रीकृ नूशी
घं आगरे २ वर्षीय य २ कूं २ रु २ स्वाहा ॥ उं आ ४ कूं हो ४ उय विऊय
यमे कर्काटकवा सुकिरीखपाल कूलिकान न नरुका कमहाय मया

सयनिवात्रत्यः ॐ देवलिगन्धपूष्यधूपदीपमङ्कगददाम्यहं तवागम
सयनिवात्रा ॥ श्रीधुं ॐ मर्वलिगृक्तस्वादनूपीवीरुजः ॥ वंहा ॥
सकृफान्सर्वसत्त्वानां शक्तिं पूर्णं कुरु ॥ ॐ देवधनम्राज्ञाययः
निरुत्वाहा ॥ यलाद्यमुनि ॥ ॐ निनागसमाधिसमाफ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
उन्नमः श्रीवक्तृसत्ताय ॥ यनानिकृपस्त्रायन ॥ नाही कामसमीनेरुनिवाग्व
मरु ॥ इहिकुच्छा वीजहन्धा रुयाधान ॥ पूर्व ॥ विहिस्वानडा वीजनीलधा
तु ॥ द ॥ विमास वीजपूष्यत्रागधा सिज ॥ ये ॥ विच्छा वीजमलिक ॥ धाकुफ
यह ॥ उ ॥ विपूवा वीजमेरु ॥ धाकुडाहाय अ ॥ वीहान्न वीजककुटी ॥ धाकु
मल ॥ ने ॥ विनेका वीविद्वल ॥ धाकुली ॥ वा ॥ वीहायूहान्न वीजानाडाकः

धामान ॥ ६७ ॥ श्रीपलका वीज महिकवाहु आहा ॥ शुभमिष शुभमृग ॥ हिमि
कुथिरुजसं हनिवाग्वल्कायास्यं नयक ॥ धननिवनिविधान क्रियाया
यधूनछाउकमीरुसुपूजा दनक स्वस्तिवाक्कनधूनछाउप्रदिष्टाया नखसि
प्रखहीलायग्वउह मूष्टेनागवाचकं स्कायनयचन्द्रविस्मृकयाउमरुध्वप
प्रखाजननहृयकं जलकृष्णस्कायनयश्रुसुकाकुमानिसुसुकातहिने ॥
पश्विहिपेस्वश्रुषदियश्रुपलवयश्रुमृगथने ॥ धूमिधायनायाछाउ ॥
श्रवाय गुनूमल्लसिधनसमाधिकं भाधिवारनधीलम्भीयकृषीयकृ
०० नायक उयूजा धूनछाउ जलकृष्णधिसान ॥ ६८ ॥ सुखं दुःखं लंका ॥
श्रीखलखनहाय ॥ उमयनिवजिगीरववजवध्वकं ॥ वजनश्रुधिसान ॥

ॐ वज्रसूत्रम् ॥ कथं कथयन् ॥ ननु ॐ मयि कथं ॥ आदि ॥ लोकपालः पापः
लाघीर्ष्यम् ॥ ॐ इत्युक्तं किंचित् वज्रसूत्रं सर्वत्र यथा धिये दत्तं ॐ इत्युक्तं
नमाम्यहं ॥ १ ॥ तालकायमहान् कर्तुं महिषासनास्ति नृजमदहं कनधार्य
श्रीकृष्णकनकनमाम्यहं ॥ २ ॥ शुद्धसूत्रिकसंकासं शुद्धतागधियप्रभुजीः
लमक्षिकधार्थ्यवर्धनयनमाम्यहं ॥ ३ ॥ सूत्रकायमहान् कर्तुं कालकाल
समयर्तुं शुद्धवर्धनप्रदाकाय कृते जायन्तमाम्यहं ॥ ४ ॥ द्वादशदिग्
नर्तुं सूत्राया नधर्तुं वीर्यामकमहं लनृधार्थ्यं शुजासनीनमाम्यहं ॥
॥ ५ ॥ लाकावर्धुमहाकायहाता रुजशरुषिर्नखे रुपाग्रधर्तुं वीर्यं
नासनीनमाम्यहं ॥ ३ ॥ यमहं कस्यार्तं सुखादहं महाबलवयलपलं

दर्वीमृगमसनीनमाम्यहं ॥ १ ॥ स्रजयाशिखिनर्तयिषुक्कवर्धुमहाकुलस
दाकल्याननिगधश्रियुक्तकनमाम्यहं ॥ ८ ॥ उर्ध्ववर्मापीनवर्धुवर्धु
वर्धुपालगश्रुकमधुनूकसूर्यहंसानुठनमाम्यहं ॥ २ ॥ नागनाकुम्भ
धवलीकुमाकुलिकलधुनी ॥ यमयनिर्सीलिकनश्रुसयनागनमाम्यहं ॥
५० ॥ विधिवीकृशधर्वयवमृगकस्युक्तीसर्वीकृकनकवर्धुयमास
ननमाम्यहं ॥ ११ ॥ नगाकुलधायन ॥ कयलासशीखलया ॥ उर्ध्वनना
वासुकिनूकककीटकयममहायमशीखयालकुलिकवन्धयालद
वर्गिमहादवमिसामसिखिमहासिखिदधुधनमहादधुधनअयला
लकुललूनदीपनन्दसांगनमहासांगनअनवकयशीकानिसून

भूर्भुवः स्वः नमः

अथैतद्विद्

रामरावना ॥

यमहासुनूयरुद्राहिकमहादलसिनिमहासिनिहमहानागमधियः
मियनालीकयम्रागरुत्वयनार्थस्यसिखाहा ॥ नगाग्रपरधन ॥ १ ॥
हामहावना ॥ नगाग्रयमस्तुलमरध्वर्वकाजयममालन्वाकद्रयनियं
कालाद्गर्भवन्धनूयं चकनरवीदिशुजुष्टुक्कवर्धुसफरुधालैकनीः
वामनागयाधधनाः पूर्वदलजनकनागजाजानीलेवधुविश्रुता ॥
दक्षिणदलयमनागजाजुक्कवर्धुयैश्वरुना ॥ यश्चिमदलेनैक
नागजाजानकवर्धुनवरुना ॥ उरुजदलेवासुकिनागजाजस्याव
धुसिफरुध ॥ अग्निदलेसरवयालनागजाजानकवर्धुसफरुध
नेसम्यदलेककर्कोटकनागजाजधवलवर्धुसफरुना ॥ वायुधदल

कलिकनाराजाकाकूर्कसवर्धसफरुता ॥ ॐ श्रीमानदलमहायज्ञनाग
नाजायीकवर्धसफरुता ॥ स्वस्वमूडाविहाव्यस्वाहम्भुसमायन्नासमय
संक्रुसमपक्कान्तप्रहृहिहाहावनृशदवअककलमहानागधियनं
हजम्भेदीययनात्रिभयआगच्छहृकृवस्व ॥ आ. पा. पू. नि. त्रा. अ. न
॥ ॐ ॥ नार्कनाजकूर्क ॥ नार्कनाजकूर्क ॥ ॐ वववृभययकूर्कस्वाहा ॥ ॐ अन्नना
यकूर्क ॥ ॐ वासुकिहृवकूर्क ॥ ॐ नरुकायकूर्कनैरु ॥ ॐ यशायकूर्कनैरु ॥ ॐ म
हायशायकूर्कनैरु ॥ ॐ श्रीखपालायकूर्कनैरु ॥ ॐ कर्काटकायकूर्कनैरु
॥ ॐ कलिकायकूर्कनैरु ॥ ॐ यम्भु ॥ वज्रधदयातागनाजस्यस्वस्वदवय
स्तिनसेताभयसदानिर्णवज्रधयनेमम्भु ॥ ॐ सर्वनथागनकायविद

(१) धन स्वाहा ॥ श्री खड्ग लन स्नान ॥ ॐ वज्र दप्य धरूं ॥ कसकन कन ॥ इड
 स्वधन ॥ ॐ स्वधुला हूं ॥ नगा कुल सिमा विय ॥ ॐ वज्र वन धुधियन
 सर्व विद्या हल ॥ कुल सिमा विहि साधन ॥ ॐ स्वधुला हूं स्वाहा ॥
 ॐ नगा वन धुधु कं धरूं न धुधु वरूं लय मा धुधु कवर्ज विहाय ॥ ॐ
 वज्र वन धुधु स्वाहा ॥ वज्र सि ॥ ॐ धा धि व्र का य स्वाहा ॥ ॐ नगा गति ॥ ॐ वज्र य
 ह्य स्वाहा ॥ इन्द्र जति ॥ ॐ वज्र न नाय स्वाहा ॥ पिना खति ॥ ॐ वज्र कू वजा
 स्वाहा ॥ वज्र सि ॥ ॐ वज्र सह का नाय स्वाहा ॥ अम्य सि ॥ ॐ अम्य निहन वजा य
 स्वाहा ॥ कू ॥ ॐ वजा य कू स्वाहा ॥ मरु ॥ ॐ सर्व पाय दहन वजा य सर्व पाय
 दह स्वाहा ॥ स्वर्ग कील ॥ ॐ वज्र य स्वाहा ॥ अरु ॥ ॐ वज्र वर गय स्वाहा ॥ नका ॥

ॐ वज्रवीजाय स्वाहा ॥ स्नान उभ ॥ ॐ सर्वार्थसिद्धि स्वाहा ॥ नमो ॥ ॐ वज्रदर्शन
कुलाय स्वाहा ॥ कालस ॥ ॐ वज्रनाजाय स्वाहा ॥ नाय ॥ ॐ ह्रीं स्वाहा ॥ मन्त्र
मूलमकुनयिसफवा ॥ वीहिदय ॥ कुलाकूमियाय ॥ थनहा कुनिधनहा वमकु
न्यास ॥ जाय ॥ ॐ वज्रवन्धाय ॐ हजुम्वदीय वधीयय हूं वं हूं स्वाहा ॥ १०८ ॥
गंगामधुलध्यापिक ॥ थनदवयुजा ॥ धूप निनाऊन यं ला धीमुनि ॥ कुलरिधियनि
नागनाजाय स्वस्वदवास्ति न सत्वाथेयिसदानिर्गवन्धाय नमस्तु ॥ नगाय
ववन् ॥ विहिदय ॥ थनमधुल कुनिविय ॥ अकुरु गंधा लोयहास यधममगध
नवाजा वमूल आ कुनिविय ॥ ॐ वन्धाय हूं वं हूं स्वाहा ॥ गंगा एतन्धजीवन्
धाय मधुल कुनिस्वाहा ॥ ॥ ॥ यं ला धीमु ॥ थनहिनिमहाजसा रिद्ववा

कथयामदानवियः॥ प्रमिष्टाकृतसादानवियसुमालः॥ धनगभजसंश्रामस
 कलाउठाउठाधूययाय॥ धीखलैखनहाय॥ उंखरछांनाहहंरुद्रवाहा॥ व
 ऊनअधिष्ठानयाय॥ उंरुंखंमंलमयनीवकीरुववऊवध्वं॥ धनऊऊजा
 हारुनवलदह्रुविहाया॥ धनधुनलवाय॥ युवाकछलवाय॥ गुनसधु
 जयाय॥ ध्यानं॥ ल्वंदवीधुखिरुगासि॥ सर्ववजानागायिनावर्यानयवि
 रूधषधुमियाजमिगासुमिगासुव॥ यथामालवलैरुगर्नीधुसिंहनका
 यिना॥ नथामालवनकिंत्वासर्वसत्त्वार्थकानधुन॥ नरुसमूर्पीधुनंवलैसंका
 नकीवाधुनिऊलपृथीवीसुभजधुस्यविहं॥ कानऊनउधुसमरुवऊ
 मयिधुमिवऊपाकानवऊपंऊलवीगानोविहाया॥ विश्ववऊवदिकायाऊ

ऊवक्रयनिधममद्यताजिबुवनीविहाव्य॥ ॐ ॥ आ-पा-निजाऊन॥ ऊर्य
याय॥ यं-ला-घं-सु॥ बलिद्विय॥ थनथ॥ हाहायाडाद॥ क्रियाविधिध्वं
निष्ठायाय॥ थनदवनाऊनिविय॥ थनैजिविदिगवल्लिविय॥ आऊनि॥
नगाऊलाग्निमखनकैकात्रशऊवरुलयमानै॥ ॐ क्ववडीविहाव्य॥ ॐ
एनथ॥ घन॥ ॐ अयुनिहगुवजाय॥ कृग॥ ॐ वजायूष॥ सगु॥ ॐ वधि
टकाय॥ वज्रगम॥ ॐ सर्वपापदहनवजायसर्वपापदह॥ लायहाड
ॐ वज्रयूष॥ अदग॥ ॐ वज्रवगमय॥ मशो॥ ॐ वज्रविजाय॥ स्वा
नउम॥ ॐ वज्रजाजाय॥ काय॥ ॐ सर्वसंयद॥ कालस॥ ॐ अमृगप्रि
यनम॥ ॐ येशमृग॥ अकनइइसगुधनैश्वसथहाडाऊलाऊनि

विय ॥ थनं निमहावलिविय ॥ थिहाज ॥ यं दग्निवलि स्नाननन प्रथ
याय ॥ श्रीखस इद्रगयाडा सर्वधुवर्धनसं ॥ कमायन ॥ मधुन विसर्जित
गुननः गुग्गुलु कक्षपूजा कक्षहिषक आसिर्वादि ॥ मयाद्रुति ॥ कक्षनं
मधुलयागो सिधिमरु श्रीलक्ष्मीयकक्षीयकक्षवक्राय ॥ वक्रक्षकक्षहि
मिसर्गकुलकुलमिधिसचयकक्षाय ॥ नागचदिसर्ग ॥ थनं नि ॥ क
नाजियूजा ॥ समयवक्र ॥ कुलदानवक्र ॥ हंसकुनयं नास्रश्च मृगय
श्च सदा नूज यजिर्क वाजिधन्यदवक्र वक्रक्षयव आदोग्रममिद्वेषा
क्षीरुमिजास्यप्रजायवक्रिहगावयासर्वममदरुकुलमृगैषाक्षिय
पजला कक्षपावनस्य नयैकर्म प्राक्षिण्यदाननमिधिरुवक्रुसास्य

१ नशनागसाधन ॥

॥ मस्युप ॥



॥ वेदमहा ॥

॥ वेदमहा ॥

॥ वेदमहा ॥



॥ वेदमहा ॥



लि॥ कृत्तिरुलहमदानंविधिसमाय॥ २॥ ॥ ६००३३॥

ॐ नमो वक्ष्यामि ॥ नमो नागरावता ॥ ॥ ॐ नमो र्यं हलहासुननमधवायूम
हलधन्वा रापटाकि नमो नमो वनधधु क्यटा कपनिमधु लेनगा ३६
दलयमिधिन नमो वनधनागनाकुसफरुध विरुवि नमानुष्यास्य
दकिधेकुऊनखधधर्न ॥ वामकुऊन नागयागधधर्न सर्वा लं कालह
धिन ॥ कलायनिवकुयर्थ कसुनस्कि नध्यायाग ॥ धूपं ग्रीखधु ॥ व
धकुवनामहानागमसमप्रीत्या रागावनाह यावर्षधना प्रमशरु ॥
॥ ॥ धनगुनमधुलसमाधि कृत्यामानसा विविधध्वं दवयजा ॥ धूलि
नागपूजा ॥ वनध कालसखानकूलनस्य रावता ॥ मटिगिधुन्यना
नकनैकं चक्रनिष्पन्नं लावना समधिर्न वेलावनयनिधामनवकुव

नृधर्मसर्वोऽसिमीमानव्यास्यसकुरुधाहृषिकीदिशुऊवामकननागयाधध
विजिज्जिगवऊवत्तलसमायनर्धपीजंसर्ववनधर्जदन्दीननाहधनसर्प्या
कालीसमयसत्वीविराव्य॥नसिस्वद्वीऊचस्मिसमानेज्ञानसत्वीअघादि
दानयूनसर्ज॥॥थनधयशीखलुमर्षयाय॥नलेहजगस्यवनधका
जसदुनहायक॥भीखपूजावनूधकासपमाथ्वीपूजा॥॥उं वऊसमय
सत्वंक॥॥००॥मूस्काप्रवधधालियिच॥पूजा॥उं॥आ॥वपूधायकूस्वाहा॥पू
जामनु॥नाऊनयायसात्रिकसाइइरुनछाहायूहास्रकसि साखशुनूवा
कूसिऊजसनाडामरस्यजायधान १०८ मनु॥उं वऊवनूधमहानागभधिय
न॥००॥हृस्वदीपवर्षाययश्नंनकूस्वाहा॥॥पंलायंमुबलिविय

दूक काय ॥ शुगुमिविय ॥ धन चांकिदाजसकय ॥ सकविय अइउभनकय
धर्मास्तुमि ॥ १ ॥ कथनयूजा ॥ पूर्व अननकनकमय कमलीकल
मूर्धन हिनाजनय रसफरुक्षमकमूर्ध्वदिशुर्ककनाकुलिर्न
नारुजयकुजगकाजउयजिमनधमरुक्षिसमयसत्वगत्समीक्षा
नसत्वी ॥ धूयः शुगुलि अर्थयागनी लयाजिमानधर्षयूजा ॥ ३ ॥ अनना
यकूखाहा ॥ पूजामस्तु ॥ गोरुनयाया ॥ ३ ॥ अनननागधियमय ॥ ३ ॥
उम्वदीपववायय २ ॥ नकूखाहा ॥ ४ ॥ पंलास्तु ॥ वालिवियशुगु
मि ॥ कस्तिकय ॥ सुमि ॥ २ ॥ खानकस्यरावना ॥ दक्षिणयज्ञनागमदिम
यं ग्रीवसेना ॥ अनभीषसफरुक्षकन्दमृक्षानन्निर्दिशुर्ककमूर्ध्वकना

अश्लिनीनारुजधनुर्जगत्कार्जुनयजिमनश्चसमयसत्त्वैर्गत्तुमर्हानसत्त्वैः॥ धूप
नक्तिर्गर्घ्यपूज्यनागप्रसाधं पूजा॥ उंयन्मायहंरुद्र॥ पूजामनु॥ नाउनयो
य॥ उंयन्महानागमधियनं००० हजम्बुदीपवर्षाययश्नं००० स्वाहा॥ ३॥
पं. ला. घं. मु॥ वलिवियरुगुनिर्नवा॥ मुनि॥ ३॥ रावना॥ यश्चिभनकक
नाप्रमयं नद्यावर्हिकधिनं सफरु॥ फीकूजनी॥ द्विउजेकसत्त्वैः॥ हः
नाअश्लिनीनारुजधनुसर्पिकांलं उयजिमनश्चप्रयसमयसत्त्वैर्वेलाया
कत्तुमर्हानसत्त्वैः॥ धूपसिक्कास॥ गर्घ्यमाशिक॥ प्रसाधं पूजा॥ उंयन्मा
नककायहं स्वाहा॥ पूजामनु॥ नाउन॥ उंनककायमहानागमधियनं०००
हजम्बुदीपवर्षाययश्नं००० स्वाहा॥ ३॥ पं. ला. घं. मु॥ वलिवियः

कुमुदिसारवन ॥ ४ ॥ रावना ॥ उरुजवासरुकिर्न सफरुक्षीजकुमर्यविभूज
किमभिनहजिगारीदि कुडैकसखीरुगा अलिनीना रुजधसर्षीकार्नेउये
जिमनुष्यसंमयसत्वीनसमीहानसत्वी ॥ धूपकथ्यज अर्यमले पूजाप्र
नर्थ ॥ ॐ आ ॥ वासरुकीय रुं स्वाहा ॥ पूजामनु ॥ गाठन ॥ ॐ आ ॥ वासरुकि
महानागमधियम ॥ रुकुच दीपवर्षीयय ॥ रुं न रुं स्वा ॥ ॥ यंला यं रु ॥ वलि
विय कुमुदिसा ॥ ३ ॥ अपयर्गयपालसिसकमयस्वसिकिकभर्व
सफरुक्षीयीगदि कुडैकसखीरुगा अलिनीना रुजधपन्नगमकार्नेउयेजि
मनुष्यनर्यसंमयसत्वीनसमीहानसत्वी ॥ धूपवाज अर्यजाडाग पूजाप्र
मानर्थ ॥ ॐ आ ॥ र्गयपालाय रुं स्वाहा ॥ पूजामनु ॥ गाठन ॥ ॐ र्गयपाल

महानागमधियम ॐ हज्जम्बुधियवर्षायय ॐ नैर्हं स्वाहा ॥ १ ॥ यं स्ना धीम्
वलिविय-उगुनिकुलेर्कम ॥ ३ ॥ रावना ॥ नैमन्धिककीटककाभमय
सफर ॥ ॐ इनीलाहरेवमनराधिरयाकृषिवद्विभुजकमूर्खीकृता
अलितनाहन्धउजगमकानैउपनिमनूष्यनसमयसत्वंनत्सर्मह
नसत्वी ॥ ध्ययनकभानमर्चयन्नुजामकीनर्थ ॥ ३ ॥ आ८ककीकटायन
स्वाहा ॥ पजामन्त्र ॥ गाठन ॥ ३ ॥ ककीटकमहानागमधियम ॐ हज्जम्बु
धीपवर्षायय ॐ नैर्हं स्वाहा ॥ १ ॥ यं स्ना धीम् ॥ वलिविय-उ
गुनिकुलेर्हाम् ॥ १ ॥ रावना ॥ वायुधकलिकलाहमयसफ
र ॥ यीनननकनविषवर्ह ॐ नूकनालाकिनकधद्विभुजक

मखेह्मगा अलिनीनाहजधपन्नगीउयजिमनन्यसमयसत्वीगतसमझानस
त्वी॥धयकनुनि अर्थककगत॥उंआःकुलिकायस्वा॥पूजासक्त॥न
उना॥उंकुलिकमहानागधियन॥हजम्वदीपवर्षीयय॥रुनैक
स्वाहा॥॥यंलाघीम्॥वलिवियकुमुनिपूवादि॥८॥रावना॥॥
त्यामहापन्नयमयनीलायनादिनशिर्नसकुरुशकनकवहृदि
कुजकमखेह्मगा अलिनीनाहजधपन्नगीउयजिमनन्यसमयसत्वीगतसमझानस
समयसत्वीगतसमझानसत्वी॥धयपन्नकशुअर्थमूटि॥पय्याया॥उं
आःसयआयस्वाहा॥पूजासक्त॥नाउना॥उंआमहायन्ननागधियन
हजम्वदीपवर्षीयय॥रुनैकस्वाहा॥यंलाघीम्॥वलिवियकुउ

निःप्रियं गु २ ॥ अर्थयायक ॥ वामकज रुधा का न द द द द द व
 न दा हि न य प्र सार्य ॥ थ थ न स र्प या य ॥ ॥ अन क वा स कि न क क
 क क्को ट क य न म हा य न र्ध र्वा ल क लिक व न र्ध या न द व मि म हा य
 व मि सा म सि वि द धु ध न म हा द धु ध न र्ध या न ल क ल २ स न द या प न य
 सा ग न म हा सा ग न अन वा क फ धी का नि म हा का नि स न य ल द्रा हि क म हा
 द न मि नि म हा मि नि आ ग रु द ग रु नाना ना धिय न या रु रु व ४ रु रु द
 स्वा हा ॥ ॥ म धु ल थिल कः स्वान न न रु मि ॥ ॥ न मा रु न आ सि वी द
 वि म ऊ न ॥ ॥ ॥ रु मि ना ग य ऊ वि वि धि स ना य ॥ ॥ अन ऊ रु इ न सा य
 सि म चू य क व नू को न रु का हि नि स ग य क रु या य ॥ ॥ वालि म नु ॥ ॥

दम्बलि ॐ हज्जम्बदीयवर्षाय यः सर्वं रुद्रं वः स्वाहा ॥ ॐ कृष्णं कृष्णं लः
अननकनागदीनां ॐ दीप्यं धूपं दीप्यं गर्भं नैवशादिवालि कृष्णं गः
ॐ देसत्वायकारार्थं वर्षधामनामस्तु सः सः नैवस्वः स्वाहा ॥ ॐ ॥ किम्बा
स्कोनाशोनिजवाधिकानागधिया नियुक्तः ॥ यः रथः की ॥ इव वृषाणि
वृगकश्चनर्कः ॥ द्वालयथासु किनागनाजा ॥ वृक्षालयपृष्ठनदीन
वागनन्द उयनन्दोऽस्तु लनाजिकासु ॥ अग्निरव्यो लककः
टकसालदीर्घसु ॥ नदीयत्वासु प्रथमः अनामनामस्किन् नककड्य
उद्यानपृष्ठासि वृजस्यहा ॥ लनाद्रुदवकुलिकादिनाजापमहिना
जायजकोननादी ॥ ह्यामहायमसनाजखर्षु कृपादयानकुलिका

हिवाय्यासमान्यगानीलनसाविराषः॥ १ ॥ मथवाह॥ वज्रधस्यअष्ट
रगपानिर्यधवलवल्हिसाडूनसशीननखरु॥ १ ॥ किन्नाऊनवर्धुऊल
अनकस्वादकट्टकविषायराम॥ २ ॥ यमस्यपोतीर्यमधुमिकीक
रुद्रवर्धु॥ ३ ॥ नरुकस्यकूकमसन्निहनीलकषायकडू॥ ४ ॥ महा
यमस्यनिरुजगस्वादडूधयानीर्य॥ ५ ॥ धीरवयालस्यमधुकषा
यजसकूकमरुनिद्रसन्निह॥ ६ ॥ कर्कोटकस्यधिनऊनस्वादशीन
जस्य॥ ७ ॥ कलिकस्यमधुकषायशीननखरुवाजि॥ ८ ॥ वासकिन
कडुनिकयीनहनिनवाजि॥ ९ ॥ नरुध्वानरुग्यर्थमर्थमर्थव्यग
नाकनीयथित्वाकसापयित्वाकन॥ विसर्जनवाजिसनावेष्टस

2.617

2.617

2.617
RILEY HALL

दिङ्गुदाययम् ॥ ॥ यस्यामलाधनारुं फलिसमाधि वनवक्रवानदध
 नैयध्यापाधये अंधनृनिर्गनकुज उर्ध्वपि रज्ज्वकधलभीनाचायना
 अरुनयगासिनसि न्यसुमालीठयाद ॥ वज्रालानलार्क किनगुधन
 सिर्नरुवायदवकु ॥ ॥

१७ यकापका ॥
 १७ यकाचिककमि ॥
 १७ काडकनडास्या ॥
 १७ धरुगुडिका ॥
 १७ पनस्यांठरानस्यां ॥
 १७ धानसिजनेव ॥
 १७ यकायनका ॥
 १७ रुद्रुव ॥

गुगुमिसिचय ॥



हिः श्री खलुः सम इहः न स या पाः उरुः स्वाः स्वाः कृतः विष्णुः निः हाः
 कृतिः कि न हानः थ सि कृ नि या स्वा वा सि ला ये सम हा ग त हि या ॥
 लं ख व डी भ स थ न वा ग म पु गु नि का ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

१ व प्र म प न स्वाः ॥	१ व क श्री खलुः ॥	१ ना रा या वी य त स इ थ ने ॥	१ सि क ल प म स न य कृ ज साः ॥
१ श यु स्वा नः ॥	१ व क ह वा य हा ॥	१ पा धा त्र कृ ग हा ॥	१ ना ग वृ स न य कृ ज साः ॥
१ का ये मा ल मि स्वाः ॥	१ न क व न्दः ॥	१ रू प क म प्र ये गु ॥	१ न र थ ह ज ल १ ॥
१ क र्ध वी ज स्वा नः ॥	१ डी सि ग ॥	१ न वा ज्रा कृ न प न क म ॥	१ प र्व स नी ल ल २ ॥
१ आ ह ज मि स्वाः ॥	१ ना य व क ॥	१ थ मि स क नि नी थ ने ॥	१ द कि ग म ल लि डि ३ ॥
१ व न मालि स्वाः ॥	१ म नो मि ल ॥	१ ऊ ल ऊ कृ ॥	१ प श्वि म प म ना ग सि कृ ४ ॥
१ ड य ल स्वाः ॥	१ क मि हा ग ॥	१ का प ज ॥	१ उ रु ज स प न क य ली ५ ॥
१ रू प क म स्वा नः ॥	१ ग थ डी ने ॥	१ व्या रु ना ग ॥	१ अ र्ग ने पू ष्य ना ग म ल ६ ॥
१ कृ ल स्वा नः ॥	१ ध प श्री खलुः ॥		१ ने म न्द्र मू ट की स ७ ॥
१ स्वा न डी ॥	१ पू गु नः ॥	१ हा ग य ॥	

१ स्वान उमः

पुनः ॥

१॥ भा. ॥

समस्तभूतकल्याण

१. क्री. मास ॥ १. न. कि. सि. ला. स. ॥ १. हि. कि. म. ड. ल. ॥
 १. म्या. ग. हा. म्. ॥ १. क. प. य. न. क. म. ज. ॥ १. क. लि. प्या. ॥
 १. क. क्री. का. न. म. ॥ १. वा. न. न. य. क. म. ज. ॥ १. ली. श्व. स. न. य. ॥
 १. क. य. गु. म. ग. ॥ १. क. म्. नु. जि. थ. न. धू. प. ॥

॥ १ वायुव्य. जाडीक. न ट ॥
॥ १ ठठठोने. मलिक. डाहा ॥
॥ १ पक्षिमृक. पक्षगन्ध. पक्षर
॥ १ गव्यसाइर. धनइनेधनइनी ॥

समनाम्नः।

१३ जिन स्वां. हा. अग्नि सिरवा ॥ १॥ नाग आवाहन ॥

१५५५. धानि. धान. ॥ १५५६. धानि. धान. ॥

॥ एकं धर्मं नित्यं गच्छेत् ॥ ॥ एकं धर्मं नित्यं गच्छेत् ॥

१ नैसाक. सिद्धाय ॥ १ सायुहामल ॥

१ कृष्ण न किं ज्ञेयं ॥ १ सा विदुः ॥

१५५५. सारवजः

एवमप्यथन॥

यानरुजा ॥

येकाजमवायूमल्लं धनधातनीलञ्चाजाकृन् नद्वयनिलैकाजशः जकृन्
नकृन् नद्वयनिलैकाजपृथिवीमल्लं यकृन् नद्वयनिलैकाजपृथि
वीमल्लं यकृन् सवीककानेयू निसस्वजाकृन् नद्वयनिलैकाजशः समन्मल्लं
कुकाजशकृन् नद्वयनिलैकाजपृथिवीमल्लं यकृन् नद्वयनिलैकाजपृथि
वीमल्लं यकृन् सवीककानेयू निसस्वजाकृन् नद्वयनिलैकाजशः समन्मल्लं

इलथायनयायक ॥ आपीमिथियाहिलायः अयादडीनलूपलडाहपलः लवकि
डाहवकिमायः यागासनअसूदलयदमयायाडाः अयादडीनसिऊयाकीलागयाडा
अयादडीनकीर्थलंययययलवः यकृन् नद्वयनिलैकाजपृथिवीमल्लं यकृन् नद्वयनिलैकाजपृथि
वीमल्लं यकृन् सवीककानेयू निसस्वजाकृन् नद्वयनिलैकाजशः समन्मल्लं
कुकाजशकृन् नद्वयनिलैकाजपृथिवीमल्लं यकृन् नद्वयनिलैकाजपृथि
वीमल्लं यकृन् सवीककानेयू निसस्वजाकृन् नद्वयनिलैकाजशः समन्मल्लं

९ नागमल्लं ॥

॥ अ३ ॥

कललवनाहमूखीअस्मिन्तलगा

॥

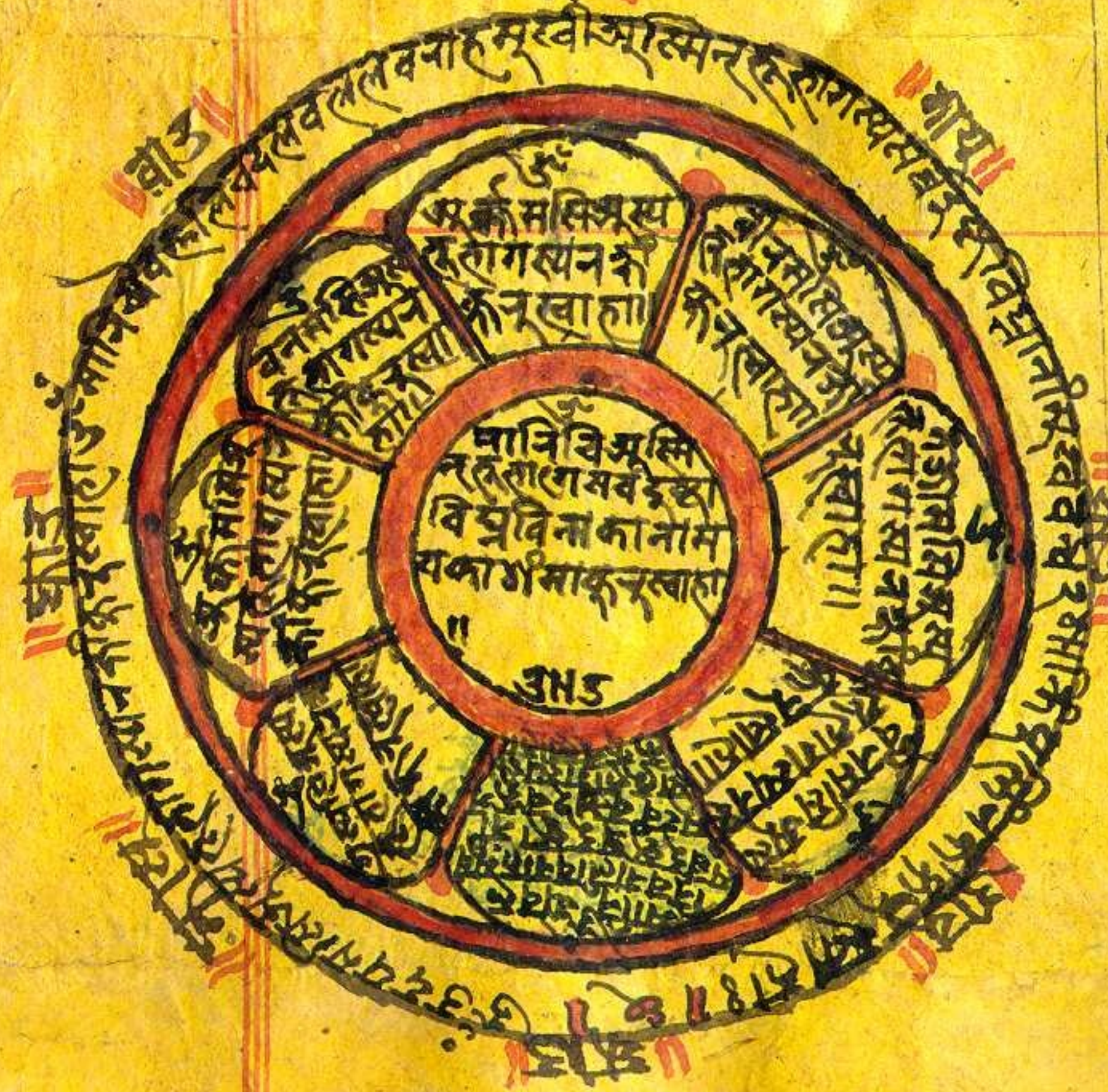
॥

॥

॥

॥

॥ अ३ ॥



एव वक्रायनी ॥ पीरुवर्धु ॥ हंसवाही श्रीषः सिमा ॥ मगः वृत्ता ॥ ककपिनदि
॥ अनननाग ॥ वन्द्यागमूसा ॥ असिमा इह जडा ॥ हरमसखा ॥ वृन्दना
जा ॥ सानिनि कु ॥ वेद्यः सिद्धा मयजीया ॥ वृन्दियिथा कु ॥ ६ ॥ उरु
न ॥ माह ववनी ॥ ववकवर्धु ॥ विष्टनः खदा इ ॥ वववाही ॥ विष्टलसिमा ॥
मगनः कष ॥ वेनावमिनदि ॥ वासकिनाग ॥ गहानससा ॥ पत्रवर्धनडा ॥
रुमरुमिरवान ॥ कवजनाजा ॥ रवकर्धु ॥ वेद्यः सिद्धा सडा जिया ॥ उमडा
ल्या कु ॥ ७ ॥ योश्चिम ॥ वृन्दायनी ॥ कृकमवर्धु ॥ गङ्गवाही ॥ मसा
कसिमा ॥ मगनः गृध ॥ पवीस्तिनदि ॥ नकुनाग ॥ कालीकुलमभान ॥
यानववर्धनडा ॥ सारवानरु ॥ वनूधनाजा ॥ चानूगिपि ॥ वेद्यः सिद्धा

नागभङ्गीया॥ वनूधरुद्र॥ ॥ दक्षिण-वाजाहि॥ श्री कृष्ण-महिषवाही॥ च
कसिसो॥ मगज-वध॥ ग्रामयनिनदि॥ कर्कटकनाग॥ कर्जकरुजवध॥
भानविजवन्दुर्जडा॥ हर-धरबाज॥ उर्मिनाजा॥ कर्महीर्थ॥ वेद्यसिद्धा॥
घरुजिया॥ काजागिद्वय॥ ॥ अग्नि-कुमानि॥ नकवर्धः कर्हि॥ नय
खावाही॥ कज-कुसिमा॥ मगज-सर्गा॥ मधुसामिनदि॥ यमनाग॥ अरुण-हाः
सम्भान॥ जलवन्दुर्जडा॥ हर-धरबाज॥ अग्निद्वयनाजा॥ वेद्यसि
द्धादिवाक्या॥ असुहासकृत्॥ ॥ नैमर्यविष्णुवि॥ ॥ सवर्धु॥ यक
गनूडवाही॥ यकमिसिमा॥ मगज-वास॥ उरु-महिनीदि॥ महायमनाग
जशिवनरुगासन॥ ॥ विजवन्दुर्जडा॥ हर-खिवारबा॥ उरुजा

जा॥ गन्धर्वमि॥ येन्यसिद्धा॥ ककुलिया॥ ऊर्यसाकृष्ट॥ ६॥ वायव्य-वासु
द्रा॥ नकुवर्धकपाज॥ प्रकवाही॥ अरुनसिमा॥ मग-रुजुखाखा॥ ग्वममि
नदि॥ सखयालेनागा॥ धात्रीधकभभन॥ कालवदरुजडा॥ रुनसजट
रवाज॥ वायुडाजा॥ दडागिथी॥ येन्य-सिद्धा-घक्षनियो॥ कटिद्वय॥ ७॥
रुभभन॥ महालक्ष्मी॥ ग्वनवर्धु॥ खडाकुसिहवाही॥ एकटीसिमा॥ म
गज-मसांगज॥ नसदानदि॥ कलिक-नाग॥ किलिकिलातभभन॥ य
मवदरुजडा॥ रुनविमिरवाज॥ महादडाजा॥ रुजडाज॥ येन्य-सिद्धा
विजुपाक॥ रुभभनवजिद्वय॥ ८॥ धनीजिज्ञालावजि-वजावजि-प
मावजि॥ धनीजि-पूर्व-काकाभभन॥ रुष्टा॥ उरुज॥ उरुकाभभन॥ मा॥ य

श्विमस ॥ स्वाना स्याजका ॥ दक्षिणस ॥ शुक्रास्थावीना ॥ मरुतयमजकिरु
पीना ॥ नमस्ययमइरीयीनजका ॥ वायुव्य ॥ मडदिनके ॥ धामा ॥ ॐ ॥
नऊमसथनीस्यामइरु ॥ जनायागिन्या ॥ एकवका ॥ वरुर्गुडा वामके
यान ॥ स्वर्धाग ॥ दक्षि ॥ शुक्रमजकहिंका ॥ प्रयालीटसवासना ॥ निर्वसना
यश्चमडामुडिना ॥ विनजामके ॥ कथनोडपुपि ॥ ॥ ॥ नृनियकाय
वक ॥ अष्टानशुक्र ॥ थनीलिकायकसव्याम्नदडा ॥ याम्नदवीनाय
वर्ग ॥ पूर्वस ॥ जलकासम्बज ॥ वकवगमदवी ॥ उरुज ॥ हयग्रीवस
म्बज ॥ स्वर्धुवाहिकादवी ॥ पश्चिमस ॥ आकाशगर्गाधायाम्नस
म्बज ॥ शुक्रनीदवी ॥ दक्षिणस ॥ हजकधायाम्नसम्बज ॥ वकव

हिनीदवी॥ अरुणस. प. अनुरागस. न. धाया. म. सम्वज. स. वीजादवी
॥ न. सम्व. न. वीजा. न. धाया. म. सम्वज. महावजादवी॥ वायुवज. स.
त्वधाया. म. सम्वज. य. क. व. हिनीदवी॥ रुद्रा. न. महावजा. धाया. म. सम्वल.
महादवी॥ ॥ द्वि. त्रि. य. वा. क. य. क. अ. स. न. क. न. क. य. धा. ॥ थ. नी. लि. वा. क.
य. क. स. या. म. सम्वज. या. म. दवी॥ शो. रु. ॥ पूर्व. स. रु. ति. न. का. धा. न. यो. स.
म्वज. न. व. नि. दवी॥ उ. रु. न. ॥ महावी. ना. धाया. म. सम्वज. ॥ महा. रु. न. वी. द.
वी॥ प. श्वि. म. स. रु. का. ना. धाया. म. सम्वज. ॥ वायु. व. ग. म. दवी॥ द. की. ध. म. ॥ स.
रु. द. धाया. म. सम्वल. ॥ महा. रु. की. दवी॥ अ. र. ग. रु. द. धाया. म. सम्वज. ॥
स्यामादवी॥ न. सम्व. ॥ महा. रु. न. व. धाया. म. सम्वल. ॥ स. रु. ड. का. दवी॥ वा.

श्रुत्या॥ विष्णुयाक्षायास्तसम्बल॥ हयकश्रुद्वी॥ ॐ नमो महावगा
क्षायास्तसम्बल॥ स्वर्गभननाद्वी॥ ॐ ॥ पथसायिरुचकीअष्टजनीः
लं॥ धर्नलि विरुचकस॥ व्यास्तदती॥ व्यास्तद्वी॥ हाकवर्ग॥ पूर्व
स॥ खलुकायाजिनीक्षायास्तसम्बल॥ पचलुद्वी॥ उरुजस॥ महाक
क्षायास्तसम्बल॥ वलुकिद्वी॥ पाशिम॥ कीकाजक्षायास्तसम्बल॥
प्रहामनिद्वी॥ दकिधस॥ विकडिष्टिक्षायास्तसम्बल॥ महानासाद्वी॥
मृग॥ सखीजाक्षायास्तसम्बल॥ वीजमनिद्वी॥ नमस्यसा॥ अमृताक्ष
यास्तसम्बल॥ स्वर्गद्वी॥ वायुथस॥ प्रहाक्षायास्तसम्बल॥ नकि
द्वी॥ ॐ नमो दहाकनिक्षायास्तसम्बल॥ क्रमछायाद्वी॥ ॐ

खलुकपालादयावीनाः प्रकवकाश्चवगुरुकुजाश्चनीनेशजयामकूटिनी
मालिङ्गनकुजद्वयनवज्जुयष्टा वामगुरुद्वयन कपालखद्योतुद
किं ह्युमनर्कः पेशमडादिगमया आटासनस्थिताः ॥ पूर्वद्वयः
प्रकवकादिगुरुमालिङ्गशः कपालहस्तादकिं ह्युमनर्कः
विनयाजोद्वयपिन्यमककः ॥ अथयजोगसमायन्नादिमस्य
यश्चमडाविरुषिना ॥ १० ॥ यनीलिङ्गनः पूर्वसः ॥ जाकिनीदवीः
रुवर्धः ॥ उरुजसः ॥ जामादवीः ॥ मेवर्धः ॥ यश्चिमसः ॥ परकुला
हादवीः प्रकवर्धः ॥ दकिं ह्यसः ॥ नृपिनीदवीः यीनवर्धः ॥ प्रनायोगि
न्याः प्रकवकाश्चवगुरुकुजा वामखद्योतुः दकिं ह्युमनर्कः दंष्ट्रा

कपालविनशा मरु कक्ष पञ्चमदा विरुषिना आलिढन सीसिमा ॥
पकूनसो ॥ पाशुदकास्यनया भूमिकलाशुग्वध ॥ ४ ॥ ॥ धइनधीः
हृत्पुण्यां कान्तसमनया हा पाताजस पगुर्गुगस पगुदिपा यगुः
दिगस ॥ पूर्वस ॥ पूर्वविदह ॥ उरुनस ॥ उम्बद्विप ॥ पाश्चिमस ॥ जप
नरगादावनि ॥ दक्षिणस ॥ उरुनकूनरुवन ॥ धेया वास कथादस रु
वी ॥ यमा भूकपा सदसना निर्माननकि वसवकि रुषिना अकनि
स्था सख्यावकि नैवसीहा नामसीहा ॥ थकिरुवन ॥ अकनिस्था रु
वनस ॥ लंकानेश अतिमकुली कू कान्तध वन्दमकुली ॥ रुगवर्क
रुहवर्क वरुमुख मूनमुख रुहवाम ॥ म पाश्चिमजकी द

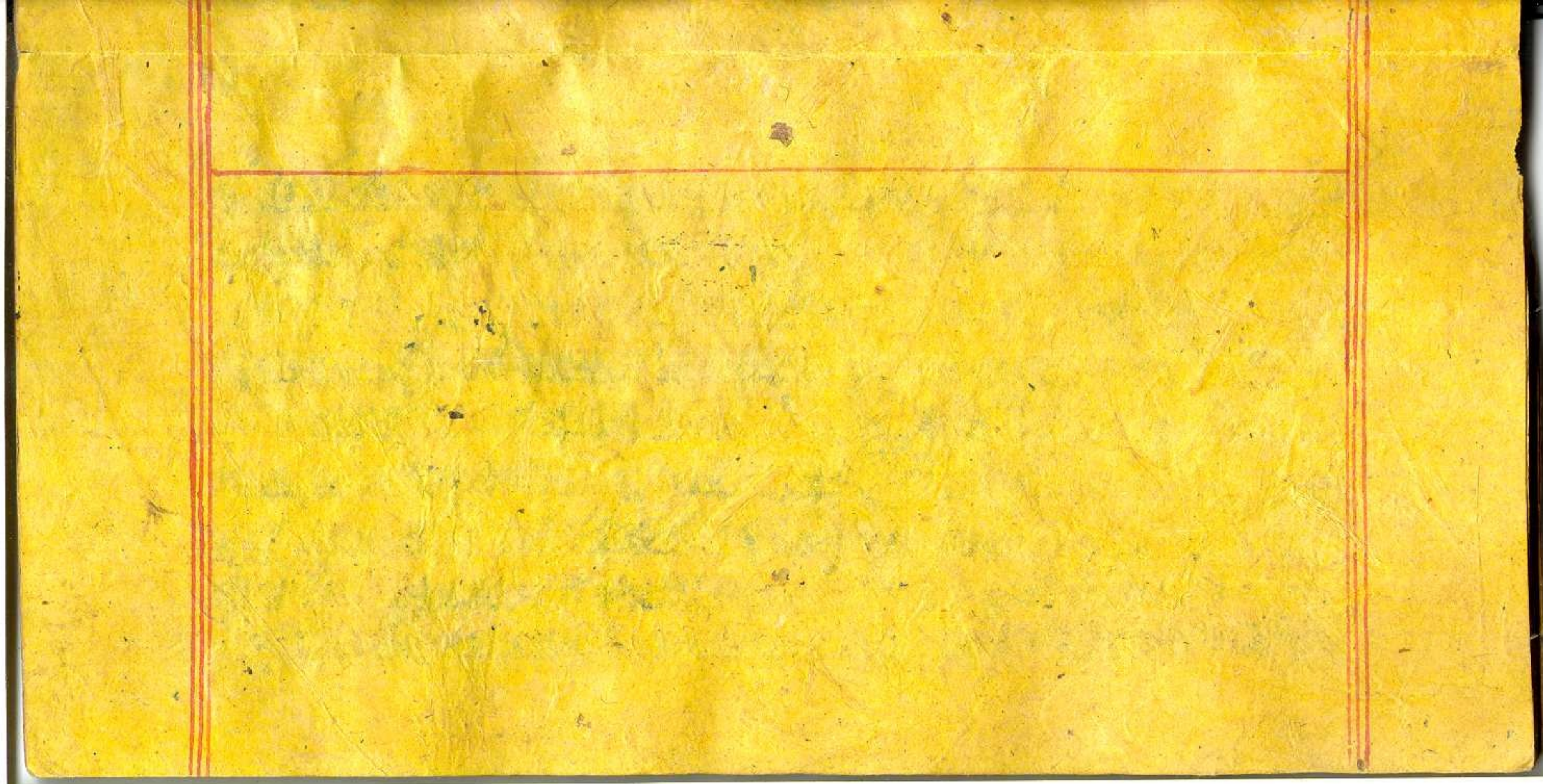
किं शयीर्ग प्रसिद्धं नक्तं वरुल दिनं विष्णुमाननं ईशाद्वटलिषर्ग
विष्णुवर्गं कर्ममालिनं उक्तं मकुटिनं उक्तं मकुटिनं वामवर्गिणं
वन्द्यं धर्जिनं दक्षिणं धर्जिनं वक्तुं मालायां किं पञ्चकपालधर्जिनं
द्वादशकुञ्जं पथमकुञ्जं द्वयनं वक्तुं वावाहिनालिङ्गं न स वक्तुं वक्तुं यथ
धर्जं द्वितीयकुञ्जं द्वयनं गङ्गावर्गं धर्जं तृतीयकुञ्जं द्वयनं उक्तं नख
द्वादशधर्जं चतुर्थकुञ्जं द्वयनं कर्णिकार्जकं पञ्चकपालधर्जं पञ्चमकु
ञ्जं द्वयनं षष्ठकुञ्जं धर्जं षष्ठमकुञ्जं द्वयनं द्विष्टं न वक्तुं धर्जं सप्त
पञ्चमस्तननसिनमालाधर्जिनं व्याघ्रवर्गं निवासनी ॥ ४८ ॥ गजवीरुस
हास्यं त्रींशं यानकं फेनूशां नक्तं नक्तं किं ध्वनवनां नक्तं नक्तं नक्तं ॥ ५० ॥

शिवकृतकयूनशिवामयि यद्वा प्रवीरुहम्भवति ॥ यश्च दाम्पत्य
दीनविमर्शलेवामः दक्षिणरागप्रकिरुः स जवकालिनादि वामकेश्च
गनयूनया जालीठासनरुं रुगवर्कधीवक्रसन्चलमात्मानं रावयन् ॥
॥ श्रीहनुकया सनिद्रसं ॥ वज्रसः शक्तिनी ॥ यश्च सः जामा ॥ गजवर्मा
सः खरश्च जीहो ॥ नयिनि ॥ उमनसः काकास्या ॥ खडाङ्गसः उज्जकास्या
कर्हिसः स्वातास्या ॥ पाङ्गसः सकनास्या ॥ यजससः उमताकि ॥ यागसः उ
मद्रुमि ॥ विश्वनसः उमद्रुमि देवी ॥ वज्रसिनेसः उममथनी देवी ॥ थ
नः यजसः यजसः कायवक्र ॥ नः रुसा ॥ वाकवक्र ॥ नृगजसा विरु
वक्र ॥ सयखः देवदेवी ॥ थती सनिद्रसगर्भ आनन्दनविष्णुक ॥ श्री

हनुकवायास्यपजमभवत् ॥ ॥ श्रीवज्रवाजाश्री ॥ दर्शनयाय ॥ क्रा
 लावालिहूलवज्रावालिइहाउनिपझावालिइहाउनि ॥ अष्टभभभ
 नइहाउनि ॥ ॥ थनेषटकान ॥ पूर्व ॥ पूर्ववैवज्रवाजाहि ॥ ॐ भ
 नवायुय ॥ हांयायामिनी ॥ वायुय ॥ नसशक्तिमाहिनी ॥ यशिम ॥ अरु
 हकिंसेवाजिहि ॥ नसशक्तिमाहिनी ॥ दहिनी ॥ ॐ भ
 रुद्ररुद्रवहिका ॥ नकवर्धनीलवर्धनी ॥ श्रीगवर्धनी ॥ गवर्धनी ॥ हनि
 नवर्धनी ॥ धर्मवर्धनी ॥ प्रगाथागिन्धा ॥ नकवक्रा ॥ वक्रुक्रुजावामकपाला
 खडाऊदकि ॥ हांउमनकालिका ॥ इहाकनालवदना ॥ दिनशामक
 कभ ॥ यशमडाविशुषिमादिगाम्बना ॥ ॥ थनवक्रुदलयनजा ॥

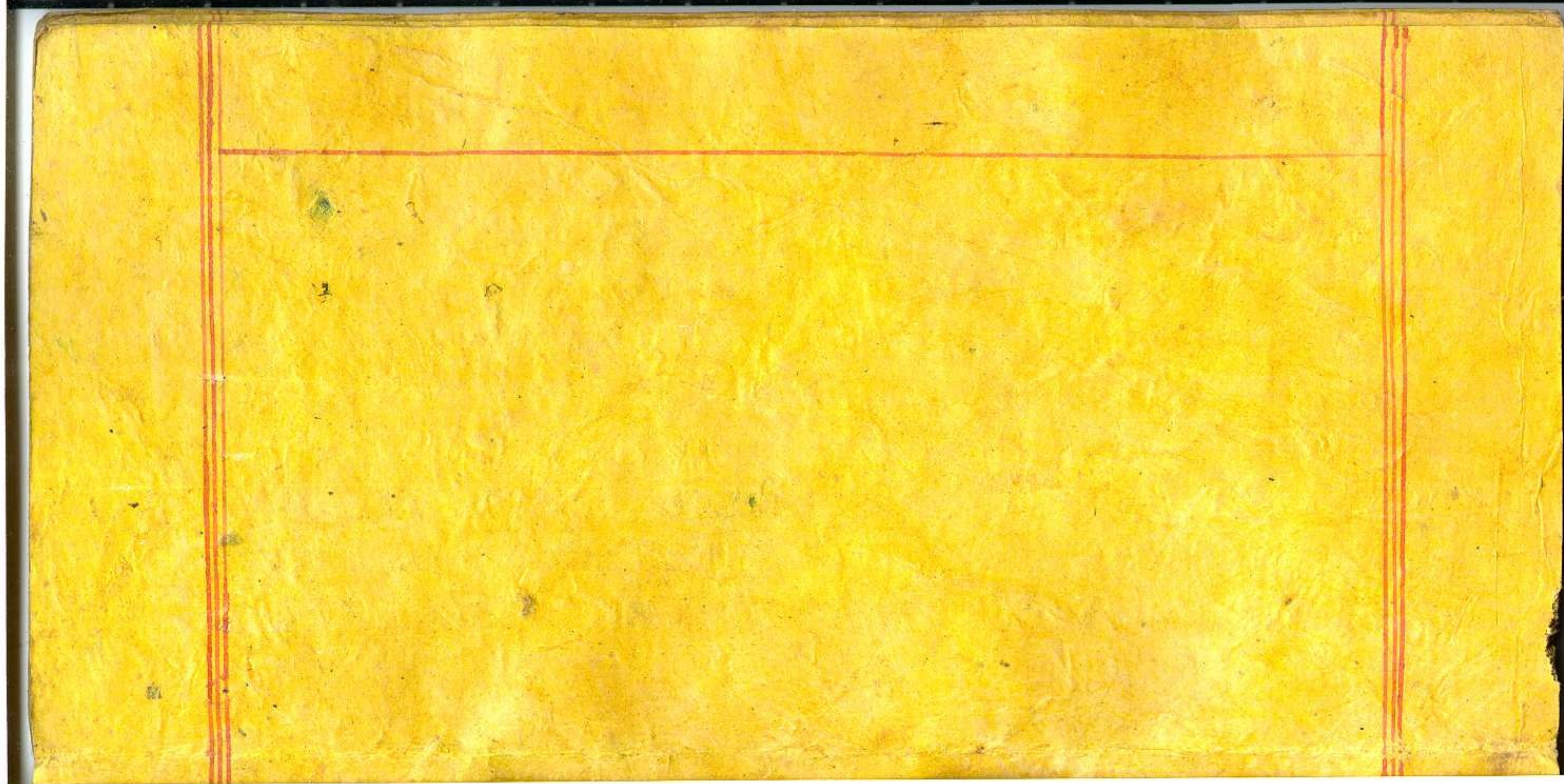
किन्तीनामाखरधुआहाजयिनी॥ ४॥ पञ्चसात्रिविदिगसा॥ ४॥
पञ्चमध्वजियावन्दनारुगवर्किवज्जवाहाहिजकवधुमकटकः
ध्वजकवकाशिनर्षादिगम्बजाखरधुमलिमाकारुमखनार्दिभुजा
वामभुजाध्वजकपूरुहकपालीधर्मादकिशभुजतः दूरं नर्जनीवज्ज
करिधर्मापञ्चमडाविषिर्मासवाङ्मधिजाननार्जयाद्ययनतगा
वर्किसमागुष्मात्तजागयन्तिः पूर्वहमागवर्कितगवथम॥ ४॥
वैवजधमधुली॥ कञ्जस्मिासूर्यमधुजसवज्जकवधु॥ त्रकमखवि
नय॥ दहितः कञ्जमुखि॥ गौदवयय॥ मकटकसि॥ दिगम्बजादिरु
ऊ॥ दहितकरिः वामकपाल॥ खर्षाग॥ पञ्चमडाविभुषिनी॥ म

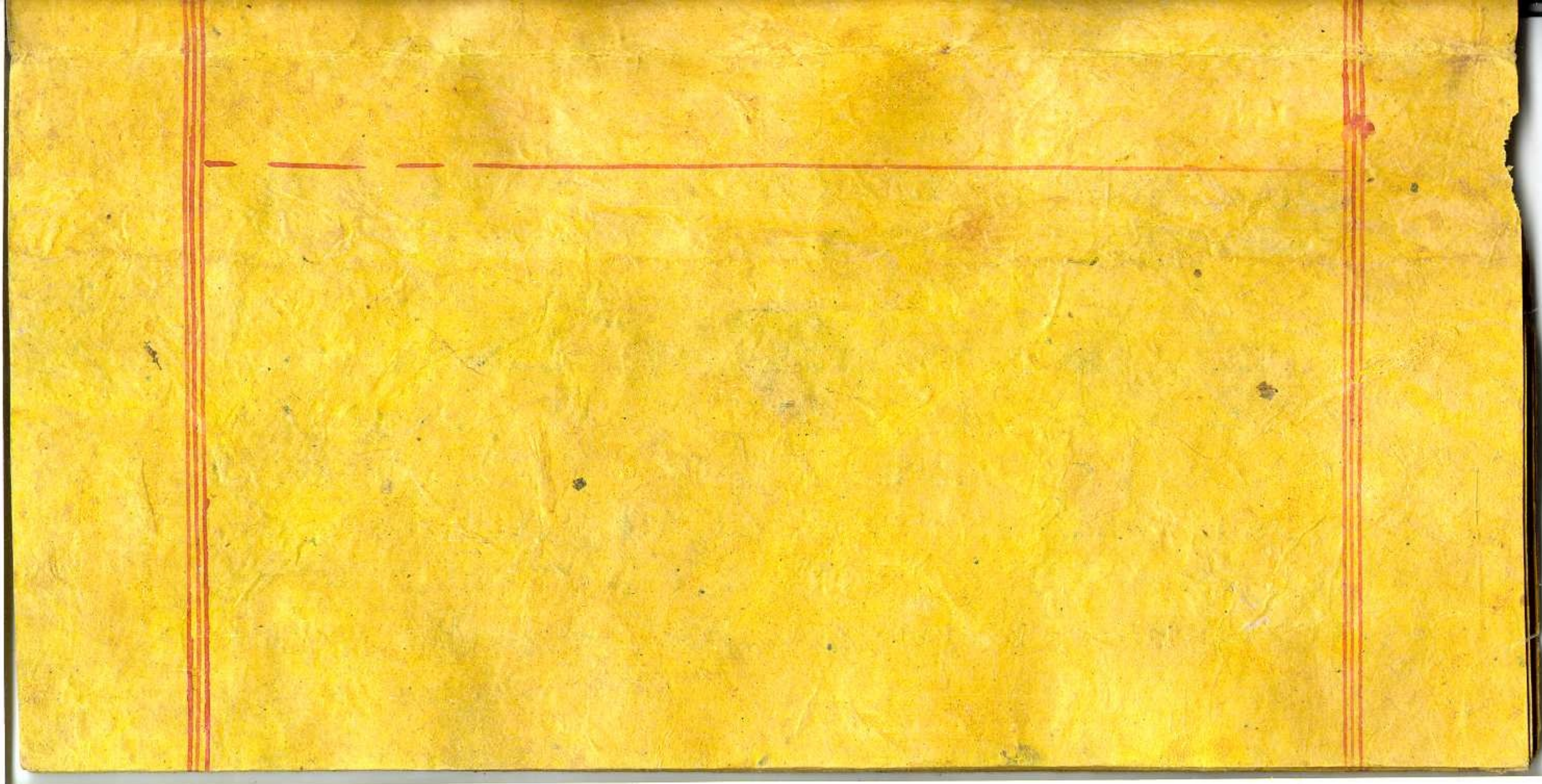
ॐ मालालीकर्ण ॥ नाथरुजधविहृषिर्न ॥ व्याघ्रवर्मकरिहृषिर्न
कयूजवर्मसुधनोपूजसाहिर्न ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥









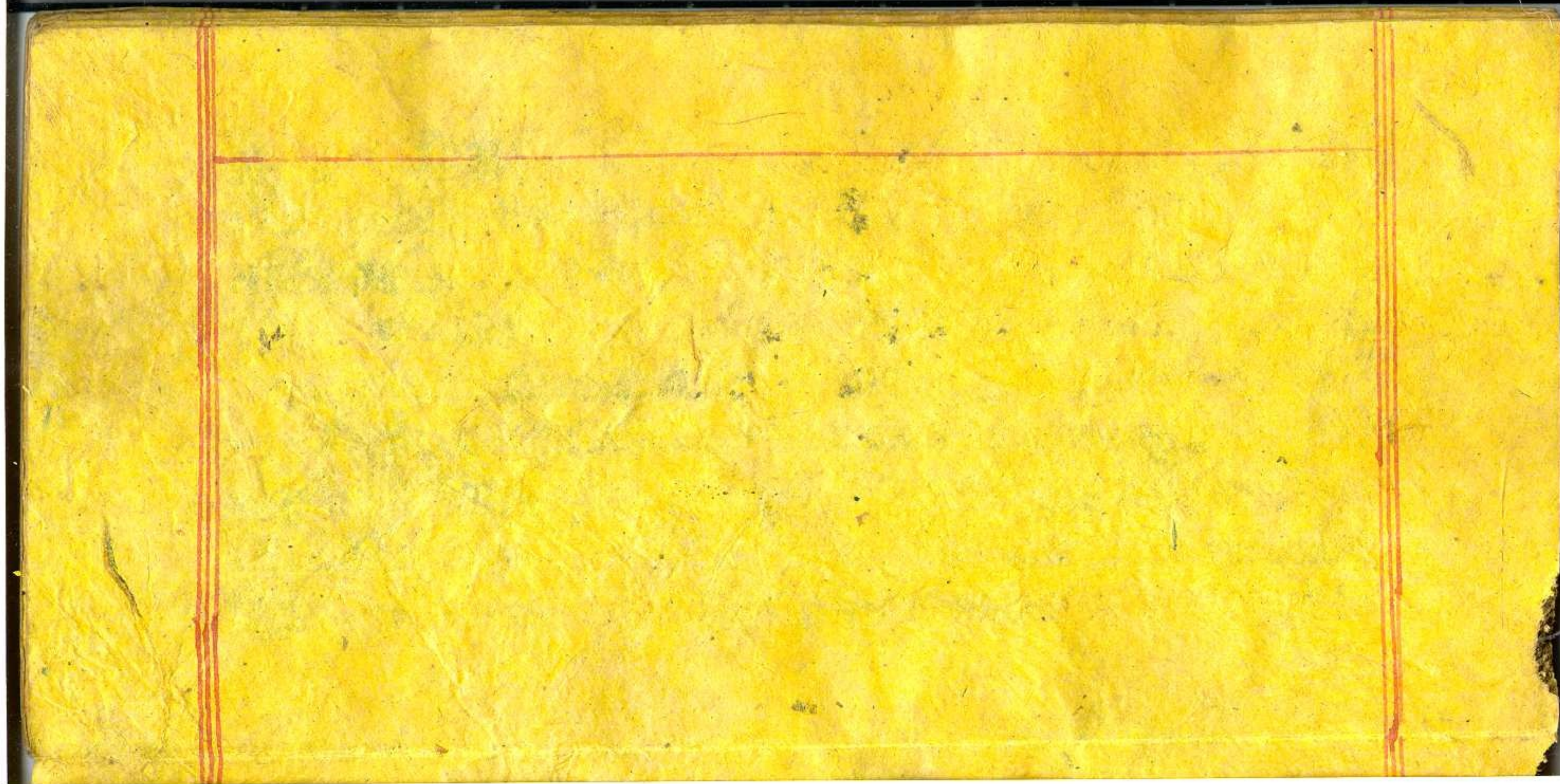


















ॐ माजीवियं हं हं ॥ मूल ॥

ॐ माजीवियं सर्वं हं हं विष्णु विनायकानां हं हं ॥ माला मंत्र ॥

ॐ धनं रक्ष जयं रमं हं हं हं हं ॥ व्याघ्र वंश साधन ॥ ५ ॥

१ धं पयासागरुल ॥

श्रीखद्युनाला — ३

कृष्णनाला — ३

कस्तुर — ४

खायकसनाला — ३

मिल — २

याकूगि ^{ध्याग} ह्यायाहा १

अगुज — ३

पालाहा — २

जिह्वा — २

नात्रिस्वी — २

कर्मिहं नविय

रुल ॥ ५ ॥

लला ^{ध्याग}
 या कू गि द्वा या हा १
 क न २
 धु गु ना ला १
 सि ला य १
 य ला १
 स क म ज १
 न य क म त्रि १
 न क व क न १
 क म त्रि १
 न कि ४

शा गि द्वा या हा १
 इ ल ॥ ४ ॥

